वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 63 शनिवार 8 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राज्य स्तरीय बुनकर पुरस्कार प्रदान किए, बाड़मेर के बुनकर को मिला राष्ट्रीय सम्मान

दुनिया के बड़े-बड़े ब्रांड देश के बुनकरों से मिला रहे हाथ: कर्नल राज्यवर्धन

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने कहा, हाथ से बने कपड़े पहनें युवा, सोशल मीडिया पर पोस्ट करें उसकी कहानी

प्रधानमंत्री ने भारतीय हथकरघा उत्पादों को दिलाई वैश्विक पहचान

जयपुर. शाबाश इंडिया

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय हथकरघा उत्पादों को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी नई पहचान दिलाई है। प्रधानमंत्री स्वयं समय-समय पर देश के बुनकरों द्वारा तैयार किए गए वस्त्र धारण कर इस समृद्ध परंपरा और भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करते हैं। कर्नल राठौड़ ने शुक्रवार को जवाहर कला केंद्र (जेकेके) में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि हाथ से बने प्रत्येक वस्त्र की अपनी अलग पहचान होती है और उसके प्रत्येक रेशे के साथ एक प्रेरक कहानी जुड़ी होती है। यही कारण है कि आज विश्व के प्रतिष्ठित ब्रांड भी भारतीय बुनकरों के साथ जुड़ रहे हैं। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि वे अधिक से अधिक हथकरघा वस्त्र पहनें तथा उनके निर्माण की पूरी प्रक्रिया, धागे से लेकर बुनाई और सिलाई तक की कहानी, सोशल मीडिया पर शेयर करें। इससे हथकरघा उत्पादों के प्रति जनजागरूकता बढ़ेगी और स्थानीय बुनकरों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार द्वारा हस्तशिल्प उत्पादों और हस्तशिल्पियों को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर जवाहर कला केंद्र में तीन दिवसीय प्रदर्शनी भी लगाई गई है। 9 अगस्त तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में करीब 60 स्टॉल स्थापित की गई हैं। राज्य के विभिन्न जिलों से आए बुनकर कोटा डोरिया साड़ी, ड्रेस मटेरियल, पंजा दरी, मालानी पट्टू, खेस, हैंडलूम बेडशीट, दुपट्टे, कुशन कवर, गृह सज्जा सामग्री, हैंडलूम शॉल, ऊनी वस्त्र, इंडिगो आधारित हथकरघा वस्त्र तथा साफा एवं पगड़ी के कपड़ों सहित विविध उत्पादों का प्रदर्शन एवं विक्रय कर रहे हैं। भारत सरकार के बुनकर सेवा केंद्र द्वारा हथकरघा प्रौद्योगिकी पर आधारित आकर्षक थीम पवेलियन तैयार किया गया है। राजस्थान को भी राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर गौरवपूर्ण उपलब्धि मिली।

हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए बुनकरों से संवाद भी किया। कार्यक्रम में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव शिखर अग्रवाल, राजस्थान हथकरघा विकास निगम की अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नम्रता वृष्णि, रीको के प्रबंध निदेशक सुरेश ओला तथा राजस्थान राज्य बुनकर संघ के प्रबंध निदेशक महावीर प्रसाद मीणा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं बड़ी संख्या में बुनकर उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट बुनकरों को राज्य स्तरीय पुरस्कार

इस कार्यक्रम में उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने उत्कृष्ट बुनकरों को राज्य स्तरीय बुनकर पुरस्कार प्रदान किए। प्रथम पुरस्कार जालोर जिले के डीगांव निवासी कानाराम को कॉटन एवं सिल्क साड़ी के उत्कृष्ट निर्माण के लिए प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार नागौर जिले के टांकला निवासी सोहनराम को कलात्मक दरी निर्माण के लिए तथा तृतीय पुरस्कार झालावाड़ जिले के असनावर निवासी धापूबाई को तोता गागरौनी डबल बेडशीट के उत्कृष्ट निर्माण के लिए प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार जोधपुर जिले के सालावास निवासी दिनेश भोबरिया को पंजा दरी तथा बाड़मेर जिले के इण्डारा निवासी कबू को टेबल कवर के उत्कृष्ट निर्माण के लिए प्रदान कर सम्मानित किया गया।

हृदय स्वास्थ्य और आयुर्वेद

संतुलित जीवनशैली का महत्व

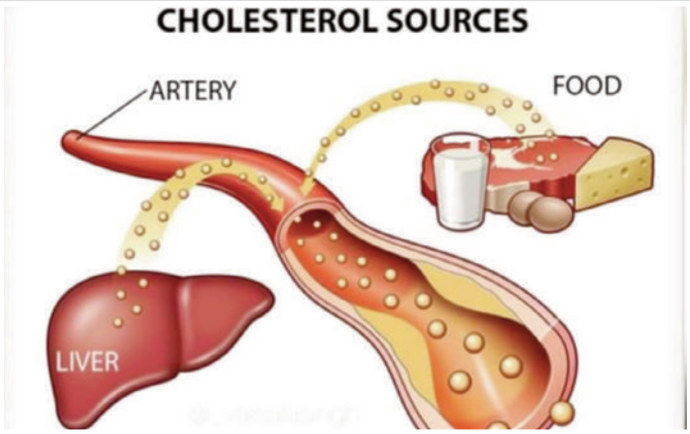

सोशल मीडिया पर इन दिनों एक संदेश व्यापक रूप से साझा किया जा रहा है, जिसमें महर्षि वाग्भट के अष्टांग हृदयम् का हवाला देते हुए हृदय रोगों और उनके उपचार के संबंध में कई दावे किए गए हैं। इनमें लौकी के रस, तुलसी और पुदीने के सेवन को हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बताया गया है। हालांकि, इन दावों को वैज्ञानिक दृष्टि से संतुलित रूप में समझना आवश्यक है। आयुर्वेद संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या, व्यायाम और प्रकृति के अनुरूप जीवनशैली पर विशेष बल देता है। लौकी, तुलसी और पुदीना जैसे खाद्य पदार्थ पौष्टिक हैं और संतुलित भोजन का हिस्सा हो सकते हैं। इनमें जल, फाइबर और विभिन्न पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो सामान्य स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माने जाते हैं। हालांकि, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार हृदयाघात (हार्ट अटैक) का प्रमुख कारण हृदय की धमनियों में वसा, कोलेस्ट्रॉल और अन्य पदार्थों के जमा होने से बनने वाली प्लाक है, जिससे रक्त प्रवाह बाधित हो जाता है। केवल रक्त की अम्लता को हार्ट अटैक का कारण मानना वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं है। इसी प्रकार, यह दावा भी प्रमाणित नहीं है कि केवल लौकी का रस पीने से हृदय की धमनियों का ब्लॉकेज समाप्त हो जाता है या बाईपास अथवा एंजियोप्लास्टी जैसी चिकित्सा प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं रहती। हृदय रोग का उपचार रोगी की स्थिति, जांच रिपोर्ट और विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह के अनुसार ही निर्धारित किया जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार हृदय को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, धूम्रपान और तंबाकू से दूरी, मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं कोलेस्ट्रॉल का नियंत्रण तथा समय-समय पर स्वास्थ्य जांच आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति को सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ, अत्यधिक पसीना या हार्ट अटैक के अन्य लक्षण दिखाई दें तो तुरंत आपातकालीन चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए। आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा दोनों का उद्देश्य स्वास्थ्य की रक्षा करना है। इसलिए किसी भी घरेलू नुस्खे या सोशल मीडिया पर प्रसारित दावे को उपचार का विकल्प मानने के बजाय योग्य आयुर्वेदाचार्य या विशेषज्ञ चिकित्सक की सलाह लेना ही सबसे सुरक्षित और उचित उपाय है।

पियूष त्रिवेदी

भारत विकास परिषद के 'बढ़ते कदम' अभियान से दिव्यांगजनों को मिला आत्मनिर्भरता का संबल

कृत्रिम अंग सहायता से मिला सम्मानपूर्ण जीवन का नया विश्वास

संतोष कुमार सिंह

वाराणसी। भारत विकास परिषद, काशी शाखा द्वारा सेवा एवं संस्कृति सप्ताह-2026 के अंतर्गत शुक्रवार को बिरदोपुर स्थित भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति परिसर में 'बढ़ते कदम : सशक्त और आत्मनिर्भर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांगजनों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और सम्मान की भावना को सुदृढ़ करना तथा समाज में सेवा, सहयोग और समरसता की संस्कृति को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण प्राप्त करने वाले दिव्यांगजनों का उत्साहवर्धन किया गया। वक्ताओं ने उन्हें आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने और समाज की मुख्यधारा में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया। शाखा अध्यक्ष सौरभ जैन ने कहा कि दिव्यांगजन केवल संवेदना के नहीं, बल्कि समान अवसर, सहभागिता और सहयोग के अधिकारी हैं। उनका आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता ही समाज की वास्तविक प्रगति का आधार है। शाखा सचिव प्रो. डॉ. अमित कुमार सिंह ने कहा कि भारत विकास परिषद का उद्देश्य सेवा के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। कृत्रिम अंग या सहायक उपकरण उपलब्ध कराना केवल एक सेवा नहीं, बल्कि किसी के जीवन में नई आशा, आत्मविश्वास और बेहतर भविष्य का संचार करना है। कार्यक्रम के पर्यवेक्षक भा. प्रद्युम्न शाह रहे। कार्यक्रम का संयोजन भा. प्रवीण सिंह, भा. अल्पना अग्रवाल, भा. नितेश सिंह एवं भा. हिमांशु पसरिचा ने किया। इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष सौरभ जैन, सचिव प्रो. डॉ. अमित कुमार सिंह, महिला संयोजिका संगीता रस्तोगी, सेवा एवं संस्कृति सप्ताह-2026 की संयोजक रश्मि शाह, संजीव अग्रवाल 'मक्कू', जीवन खन्ना सहित भारत विकास परिषद के अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

उम्र भले पूरी हो जाए, ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा कभी समाप्त नहीं होनी चाहिए: आचार्य पुलकसागर महाराज

सूर्यमहल में उमड़ रहे श्रद्धालु, 15 अगस्त से चित्रकूटधाम में होगा ज्ञान गंगा महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से आयोजित चातुर्मास में राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में सूर्यमहल में धर्म साधना का क्रम निरंतर जारी है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु गुरुदर्शन और धर्म संदेश का लाभ लेने पहुंच रहे हैं। शुक्रवार को धर्मसभा में आचार्य पुलकसागर महाराज ने कहा कि जिनवाणी का केवल श्रवण ही नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारना भी आवश्यक है। जब तक मनुष्य अपने आत्मस्वरूप को नहीं पहचानता, तब तक जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझ नहीं सकता। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन का सार आत्मबोध और समता के भाव में निहित है। आचार्यश्री ने कहा कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती। व्यक्ति का जीवन समाप्त हो सकता है, लेकिन ज्ञान की यात्रा कभी पूरी नहीं होती। इसलिए उम्र चाहे जितनी हो जाए, ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा सदैव बनी रहनी चाहिए। निरंतर ज्ञान अर्जित करने से ही जीवन सार्थक बनता है। उन्होंने समता को जीवन का आधार बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति सुख-दुःख में समभाव रखता है, वही कठिन परिस्थितियों का भी सहजता से सामना कर पाता है। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य विमलादेवी, ओमप्रकाश, अशोककुमार, रविंद्र, जिनेंद्र एवं विनय कांटीवाल परिवार, सुभाषनगर को प्राप्त हुआ। समिति के संयोजक मनीष शाह ने बताया कि सूर्यमहल में 14 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 8:30 से 10 बजे तक प्रवचन तथा शाम 7 से 8 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती का आयोजन होगा। वहीं, सह-संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि 15 से 30 अगस्त तक चित्रकूटधाम में आयोजित होने वाले ज्ञान गंगा महोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। महोत्सव में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है तथा देश-प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुओं के भीलवाड़ा पहुंचने की सूचनाएं मिल रही हैं।

चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य विमलादेवी, ओमप्रकाश, अशोककुमार, रविंद्र, जिनेंद्र एवं विनय कांटीवाल परिवार, सुभाषनगर को प्राप्त हुआ। समिति के संयोजक मनीष शाह ने बताया कि सूर्यमहल में 14 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 8 :30 से 10 बजे तक प्रवचन तथा शाम 7 से 8 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती का आयोजन होगा।

कई जन्मों के पुण्योदय से मिलता है भारत में जन्म: आचार्य रामदयालजी महाराज

अज्ञान ही मानसिक संताप और दु:खों का सबसे बड़ा कारण बताया

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। माणिक्यनगर रामद्वारा धाम में आयोजित 'विश्व शांति कल्याण' चातुर्मास के अंतर्गत शुक्रवार को दैनिक सत्संग में अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय शाहपुरा के पीठाधीश्वर जगद्गुरु आचार्य स्वामी श्रीरामदयालजी महाराज ने कहा कि कई जन्मों के पुण्योदय से भारत की पावन भूमि पर जन्म मिलता है और अनंत जन्मों के सौभाग्य से सद्गुरु की कृपा प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि संसार का प्रेम व्यक्ति को कमजोर बनाता है, जबकि सद्गुरु का प्रेम और मार्गदर्शन उसे आत्मिक रूप से सशक्त करता है। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में अधिकांश विवाद अज्ञान, अर्थवाद और अहंकार के कारण उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति अपने अज्ञान से जितना मानसिक संताप और दुःख प्राप्त करता है, उतना किसी अन्य कारण से नहीं। उन्होंने कहा कि जो व्यवहार हमें अपने लिए पसंद नहीं, वह दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। गुरुओं, वेदों, धर्म और संस्कृति के प्रति सम्मान बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने भीलवाड़ा को अनुभव वाणी की प्राकट्य भूमि बताते हुए कहा कि स्वामी रामचरण महाराज ने यहीं अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय की स्थापना की थी। इससे पूर्व संत मनोरथरामजी आलोट ने मानस प्रवचन तथा संत प्रीतमरामजी ने भजनों की प्रस्तुति दी। सत्संग के अंत में श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री की आरती उतारी। कार्यक्रम में भीलवाड़ा सहित विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

तीये की बैठक

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है
कि हमारी पूजनीय

श्रीमती मैना देवी

धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री त्रिलोक चंद अजमेरा
(बचेरा वाले)
का स्वर्गवास 7 अगस्त को हो गया है।

श्रीमती मैना देवी
धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री त्रिलोक चंद अजमेरा
(बचेरा वाले)

तीये की बैठक

दिनांक : रविवार, 9 अगस्त 2026
समय : प्रात: 9:00 बजे
स्थान : आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर।

शोकाकुल

- श्रीमती जीवन अजमेरा (पुत्रवधू)
- राजेश – आरती अजमेरा (पौत्र–पौत्रवधू)

पीहर पक्ष

- सज्जन जैन गोधा
- ललित – ऊषा गोधा
- प्रतिभा गोधा
- पदम – पुष्पा गोधा (भाई–भाभी)
- अश्विनी – मधु गोधा
- अमित – रिंकू गोधा (सरवाड़ वाले)
- महावीर (डब्बू) – मनोज ठोलिया (भतीजे–भतीजे बहू)
- राजेश – अंजना गोदिका
- दिनेश – मीतू गोदिका
- राकेश – समता गोदिका (भांजे–भांजे बहू)
- रेणु – राकेश संघी
- अशोक – प्रमिला टोंग्या
- अनामिका – सुनील पाटनी (भतीजी–जवाई)
- राज – संतोष गंगवाल (भांजी–जवाई)

विशेष सूचना

पीहर पक्ष की बैठक

दिनांक : शनिवार, 8 अगस्त 2026
समय : प्रात: 10:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक
स्थान : प्लॉट नं. 113, नैमिसागर कॉलोनी, वैशाली नगर, जयपुर।

राजनीति

गांव की हर चीज चाहिए, लेकिन गांव नहीं चाहिए

डॉ. प्रियंका सौरभ

''गांव की हर चीज चाहिए, लेकिन गांव नहीं चाहिए।'' यह वाक्य आज के समाज की विडंबना को उजागर करता है। हम गांव के शुद्ध दूध, देसी घी, जैविक अनाज, ताजी सब्जियों और प्राकृतिक जीवन की प्रशंसा करते हैं, लेकिन स्वयं गांव में रहना नहीं चाहते। गांव की संस्कृति, लोकगीत, त्योहार और अपनत्व हमारी पहचान माने जाते हैं, फिर भी विकास की दौड़ में गांव लगातार उपेक्षा का शिकार है। यह केवल जीवन-शैली का विरोधाभास नहीं, बल्कि विकास की हमारी सोच पर भी गंभीर प्रश्न है। भारत की आत्मा आज भी गांवों में बसती है। देश की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसके बावजूद गांव का उत्पाद सम्मान पाता है, जबकि गांव स्वयं बुनियादी सुविधाओं के अभाव से जूझता है। शहरों में ऑर्गेनिक उत्पादों की माँग बढ़ रही है, लेकिन इन्हें पैदा करने वाला किसान शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक आय जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करता है। यह स्थिति विकास के असंतुलन को दर्शाती है। ग्रामीण जीवन की सबसे बड़ी शक्ति उसका सामाजिक ताना-बाना रहा है। सुख-दुःख में पूरा गांव एक परिवार की तरह साथ खड़ा होता है। आज महानगरों में लोग इसी आत्मीयता की तलाश करते हैं, जबकि गांव की चौपाल, पीपल की छाँव और सामूहिक संवाद धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। विडंबना यह है कि हम इन मूल्यों की सराहना तो करते हैं, लेकिन उन्हें बचाने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं करते। शिक्षा और रोजगार की कमी ने ग्रामीण युवाओं का पलायन तेज किया है। शहर में बसना सफलता का प्रतीक माना जाने लगा है, जबकि गांव लौटना पिछड़ेपन से जोड़ दिया जाता है। परिणामस्वरूप गांवों की युवा शक्ति शहरों में खप रही है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएँ, डिजिटल कनेक्टिविटी, कृषि आधारित उद्योग और स्थानीय रोजगार उपलब्ध हों, तो पलायन स्वतः कम हो सकता है। निस्संदेह गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, स्वच्छता और सामाजिक कुरीतियों जैसी अनेक चुनौतियाँ हैं।

संपादकीय

मोहन भागवत का जेन-जी समर्थन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत का हालिया बयान देश की युवा पीढ़ी को लेकर एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। मुंबई में जेन-जी और जेन-अल्फा युवाओं के साथ संवाद कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि विरोध करने से जेन-जी देशद्रोही या एंटी-नेशनल नहीं हो जाते। वे हमारे अपने लोग और देश का भविष्य हैं। भागवत ने उन्हें मौजूदा पीढ़ी से अधिक ईमानदार तथा देशभक्त बताते हुए कहा कि नई पीढ़ी पर भरोसा

किया जाना चाहिए। उनका यह वक्तव्य केवल एक संगठन प्रमुख की राय नहीं, बल्कि समाज और शासन व्यवस्था के लिए भी एक संकेत है कि युवाओं की आवाज को दबाने के बजाय उसे समझना और संवाद के माध्यम से समाधान तलाशना अधिक प्रभावी होगा। भागवत ने कहा कि उनकी पीढ़ी बिना सवाल किए बड़ों की बात मान लेती थी, जबकि आज की जेन-जी हर बात का तार्किक और तथ्य आधारित उत्तर चाहती है। उन्हें केवल आदेश नहीं, बल्कि सम्मान, अपनापन और विश्वास चाहिए। लोकतंत्र में असहमति और आंदोलन संवाद के वैध माध्यम हैं। उनका कहना था कि यदि समय रहते संवाद स्थापित किया जाए तो कई विवाद टाले जा सकते हैं। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार तथा शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत खर्च किए जाने की आवश्यकता भी दोहराई। इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने युवाओं की चिंताओं को गंभीरता से स्वीकार करने की बात कही। यह बयान इसलिए भी चर्चा में है क्योंकि हाल के वर्षों में छात्र आंदोलनों और विरोध प्रदर्शनों के दौरान कुछ वर्गों द्वारा युवाओं को राष्ट्रविरोधी बताने की प्रवृत्ति देखने को मिली। भागवत ने इस सोच का समर्थन नहीं किया। उन्होंने कहा कि यदि आंख मूंदकर किसी पर भरोसा करना पड़े तो वे जेन-जी पर भरोसा करेंगे। यह कथन नई पीढ़ी के प्रति उनके विश्वास को दर्शाता है। डिजिटल युग में पले-बढ़े युवा सूचना, तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं। वे परंपराओं और नीतियों को प्रश्नों की कसौटी पर परखते हैं। उनका विरोध व्यवस्था में सुधार की अपेक्षा का संकेत भी माना जा सकता है। भागवत ने यह भी कहा कि आंदोलन का उद्देश्य समाज में विभाजन नहीं, बल्कि व्यापक सहमति का निर्माण होना चाहिए। उन्होंने संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों का उल्लेख करते हुए लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीकों के महत्व पर बल दिया। यह दृष्टिकोण अधिकारों के साथ जिम्मेदारियों की भी याद दिलाता है। उनका मानना है कि युवाओं में सेवा, राष्ट्रभक्ति और सकारात्मक परिवर्तन की क्षमता प्रचुर मात्रा में मौजूद है, जिसे उचित दिशा देने की आवश्यकता है। आज का युवा रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और भविष्य की अनिश्चितताओं जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और समाज के बीच निरंतर संवाद आवश्यक है। यदि युवाओं की अपेक्षाओं और समस्याओं को समय रहते समझा जाए तो अनेक सामाजिक और शैक्षिक विवादों का समाधान संभव है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

भारत की हरित क्रांति के जनक

प्रदीप पाटिल

भारत रत्न डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को भारत की हरित क्रांति का जनक कहा जाता है। कृषि विज्ञान के क्षेत्र में उनके दूरदर्शी नेतृत्व और वैज्ञानिक योगदान ने भारत को खाद्यान्न संकट से उबारकर आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रभावी नीतियों और किसानों के साथ जमीनी जुड़ाव के माध्यम से भारतीय कृषि की दिशा और दशा दोनों बदल दीं। आज भारत विश्व के प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक देशों में शामिल है तो इसमें डॉ. स्वामीनाथन की निर्णायक भूमिका रही है। 7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु में जन्मे डॉ. स्वामीनाथन ने अपना जीवन खाद्य सुरक्षा और टिकाऊ कृषि के लिए समर्पित किया। 1960 के दशक में देश अकाल, खाद्यान्न की कमी और आयात पर निर्भरता जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा था। ऐसे समय उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ कृषि उत्पादन बढ़ाने की दिशा में ऐतिहासिक पहल की और हरित क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। उनका सबसे बड़ा योगदान भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप उच्च उपज देने वाली गेहूं और धान की किस्मों का विकास और प्रसार था। उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. नॉर्मन बोरलॉग सहित अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों के सहयोग से मेक्सिको की बौनी गेहूं किस्मों को भारतीय कृषि के अनुरूप विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन किस्मों ने पंजाब और हरियाणा से शुरू होकर पूरे देश में उत्पादन बढ़ाने का आधार तैयार किया। डॉ. स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को मजबूत और अधिक प्रभावी संस्थान बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नेतृत्व में कृषि अनुसंधान प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि किसानों की वास्तविक समस्याओं के समाधान से जुड़ गया। उन्होंने वैज्ञानिकों, किसानों और नीति-निर्माताओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर विशेष बल दिया। वे टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल कृषि के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग और भूजल के अत्यधिक दोहन से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति समय रहते चेताया। इसी सोच के तहत उन्होंने 'एवरग्रीन रिवोल्यूशन' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका उद्देश्य पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि करना था। उन्होंने जैविक खेती, जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य और फसल विविधीकरण को भविष्य की कृषि का आधार माना। छोटे और सीमांत किसानों के हितों की रक्षा भी उनके कार्यों का प्रमुख उद्देश्य रही। उन्होंने किसानों के बीजों को सुरक्षित रखने, उपयोग करने और साझा करने के अधिकारों का समर्थन किया। उनके प्रयासों से पौधा-किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 2001 अस्तित्व में आया, जिसे परंपरागत ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के संतुलन का महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने वर्ष 2006 में सिफारिश की कि न्यूनतम समर्थन मूल्य उत्पादन लागत से कम-से-कम 50 प्रतिशत अधिक होना चाहिए। साथ ही ग्रामीण आधारभूत ढांचे, संस्थागत ऋण, सिंचाई और बाजार व्यवस्था को मजबूत बनाने पर भी उन्होंने जोर दिया। आज जब भारत जलवायु परिवर्तन, जल संकट और बाजार की अनिश्चितताओं जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब डॉ. स्वामीनाथन के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक हैं। कृषि अनुसंधान का आधुनिकीकरण, डिजिटल तकनीकों का विस्तार, जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई, मृदा परीक्षण, जल संरक्षण और किसानों को जलवायु-अनुकूल तकनीकों का प्रशिक्षण समय की आवश्यकता है।

पुष्पगिरि तीर्थ पर बना इतिहास, हजारों श्रद्धालुओं ने रखा सामूहिक उपवास

राज्यपाल थावरचंद गहलोत बोले— जन्म से जैन नहीं, लेकिन जैन सिद्धांतों से हूं प्रभावित

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास तथा पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में पुष्पगिरि तीर्थ पर आयोजित 'हर मास एक उपवास' महाअभियान के नौवें सामूहिक उपवास कार्यक्रम में हजारों श्रद्धालुओं ने उपवास रखकर विश्व शांति और आत्मकल्याण का संकल्प लिया। कार्यक्रम गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज एवं अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने कहा कि वे जन्म से जैन नहीं हैं, लेकिन जैन धर्म के सिद्धांतों से अत्यंत प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार बाबा रामदेव ने योग को जन-जन तक पहुंचाया, उसी प्रकार 'हर मास एक उपवास' अभियान भी विश्व कल्याण का माध्यम बनेगा। उन्होंने बताया कि एक जैन संत की प्रेरणा से उन्होंने जीवनभर के लिए सौंफ का त्याग किया। हरिद्वार से पधारे स्वामी चिन्मयानंद बापू ने कहा कि संतों की वाणी में परमात्मा का संदेश होता है, लेकिन उससे पहले व्यक्ति को अपनी आत्मा को पहचानना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक माह की 7 तारीख को पूरी दुनिया उपवास का संकल्प ले, तो विश्व में स्वास्थ्य और आत्मशुद्धि की नई क्रांति आ सकती है। गणाचार्य पुष्पदंत सागर महाराज ने कहा कि साधना का अर्थ अपने भीतर उतरकर आत्मा से मिलना है। वहीं अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने कहा कि छोटे-छोटे नियम ही आगे चलकर बड़े संकल्प बनते हैं। यदि शरीर स्वस्थ रहेगा तो जीवन भी सही दिशा में चलेगा, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को महीने में कम से कम एक उपवास अवश्य करना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ हुआ। संघ के प्रवर्तक मुनि सहज सागर महाराज ने उपवास के आध्यात्मिक और स्वास्थ्य लाभ बताए, जबकि उपाध्याय मुनि पीयूष सागर महाराज ने जीवन में संयम और अनुशासन अपनाने का संदेश दिया। पुष्पगिरि परिवार ने राज्यपाल थावरचंद गहलोत, स्वामी चिन्मयानंद बापू, राज्यमंत्री दिलीप अहिरवार, पद्मश्री कालूराम बामनिया सहित विभिन्न अतिथियों का सम्मान किया। इस अवसर पर नगर सुरक्षा समिति के सदस्यों को हेलमेट भेंट किए गए तथा कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास, सोनकच्छ की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं रिया चंदर सिंह बामनिया (90.2%) और मुस्कान राजेश कलेसरिया (76.4%) को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कलेक्टर ऋतुराज सिंह, एसपी पुनीत गहलोत, अपर कलेक्टर संजीव जैन, पुष्पगिरि अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा, सचिव सुभाष जैन सहित बड़ी संख्या में संत, जनप्रतिनिधि और श्रद्धालु उपस्थित रहे। अंत में अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा ने आभार व्यक्त किया।

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला अंचल के लहरिया उत्सव में बिखरी सावन की उमंग

सावन सुंदरी प्रतियोगिता, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सामूहिक नृत्य ने बांधा समां

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला अंचल, राजस्थान-जयपुर के तत्वावधान में शुक्रवार को तोतूका भवन, भट्टारकजी की नसियां में लहरिया उत्सव-2026 का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सावन की पारंपरिक संस्कृति, रंग-बिरंगे लहरिया परिधानों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उत्सव को उल्लासमय बना दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महासमिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती शीला डोड्या ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रितु कासलीवाल, प्रमुख आकर्षण के रूप में मिसेज इंडिया श्रीमती श्वेता मोदी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती सीमा जैन (गाजियाबाद) उपस्थित रहीं। आयोजन को सफल बनाने में राजस्थान अंचल अध्यक्ष श्रीमती शालिनी बाकलीवाल, श्रीमती वंदना जैन, श्री विद्युत लुहाड़िया, श्रीमती सुशीला छाबड़ा एवं श्रीमती विनीता जैन का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर श्रीमती आशा गर्ग, डॉ. शांता मणि जैन, श्रीमती नीना पहाड़िया, श्रीमती सविता जैन, श्रीमती स्नेहलता सोगानी तथा श्रीमती त्रिशला गोधा सहित समाज की अनेक वरिष्ठ महिलाओं ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। उत्सव के अंतर्गत आयोजित सावन सुंदरी प्रतियोगिता में श्रीमती पीहू जैन विजेता बनीं। ऐश्वर्या जैन प्रथम रनर-अप तथा जौली जैन द्वितीय रनर-अप रहीं। वहीं, सावन सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में सिद्धार्थ नगर संभाग ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि त्रिशला संभाग और सिविल लाइंस संभाग संयुक्त रूप से रनर-अप रहे। कार्यक्रम में गीतों भरी हाउजी, लकी ड्रॉ, सरप्राइज गिफ्ट्स और विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों ने महिलाओं का भरपूर मनोरंजन किया। जयपुर के 18 संभागों की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आयोजन को यादगार बना दिया। समापन पर सभी ने पारंपरिक राजस्थानी सहभोज में दाल-बाटी, चूरमा सहित विभिन्न व्यंजनों का आनंद लिया। समाज के गणमान्य सदस्यों एवं बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति ने आयोजन को भव्य और सफल बनाया।

संकल्प के साथ हुआ विश्व स्तनपान सप्ताह का समापन

महावीर इंटरनेशनल ने माताओं को किया सम्मानित, स्तनपान के प्रति किया जागरूक

गढ़ी/बांसवाड़ा. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल, गढ़ी-परतापुर द्वारा 1 से 7 अगस्त तक आयोजित विश्व स्तनपान सप्ताह का समापन शुक्रवार शाम पंवार परिसर में संकल्प समारोह के साथ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुगन कुंवर ने की, जबकि कुसुम कोठिया मुख्य अतिथि रहीं। इस अवसर पर उन माताओं का सम्मान किया गया, जिन्होंने शिशुओं के स्वास्थ्य के लिए स्तनपान को प्राथमिकता देते हुए सकारात्मक भूमिका निभाई। कार्यक्रम में महिलाओं को स्तनपान के महत्व तथा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया ने महिला सशक्तिकरण और वित्तीय आत्मनिर्भरता पर विचार व्यक्त करते हुए महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनने की प्रेरणा दी। मुख्य अतिथि कुसुम कोठिया ने कहा कि जन्म के पहले दो घंटे के भीतर शिशु को मां का दूध पिलाना अत्यंत लाभदायक होता है। उन्होंने उपस्थित महिलाओं को संकल्प दिलाया कि वे स्तनपान को लेकर किसी प्रकार की झिझक नहीं रखेंगी और प्रत्येक नवजात को उसका अधिकार दिलाने में अपनी भूमिका निभाएंगी। अध्यक्ष सुगन कुंवर ने कहा कि स्तनपान से मां और शिशु के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत होता है तथा यह शिशु के स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक विकास का आधार है। कार्यक्रम का संचालन हिम्मत सिंह पंवार ने किया। प्रारंभ में रंजना कुंवर ने अतिथियों का स्वागत किया तथा अंत में अजीत कोठिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

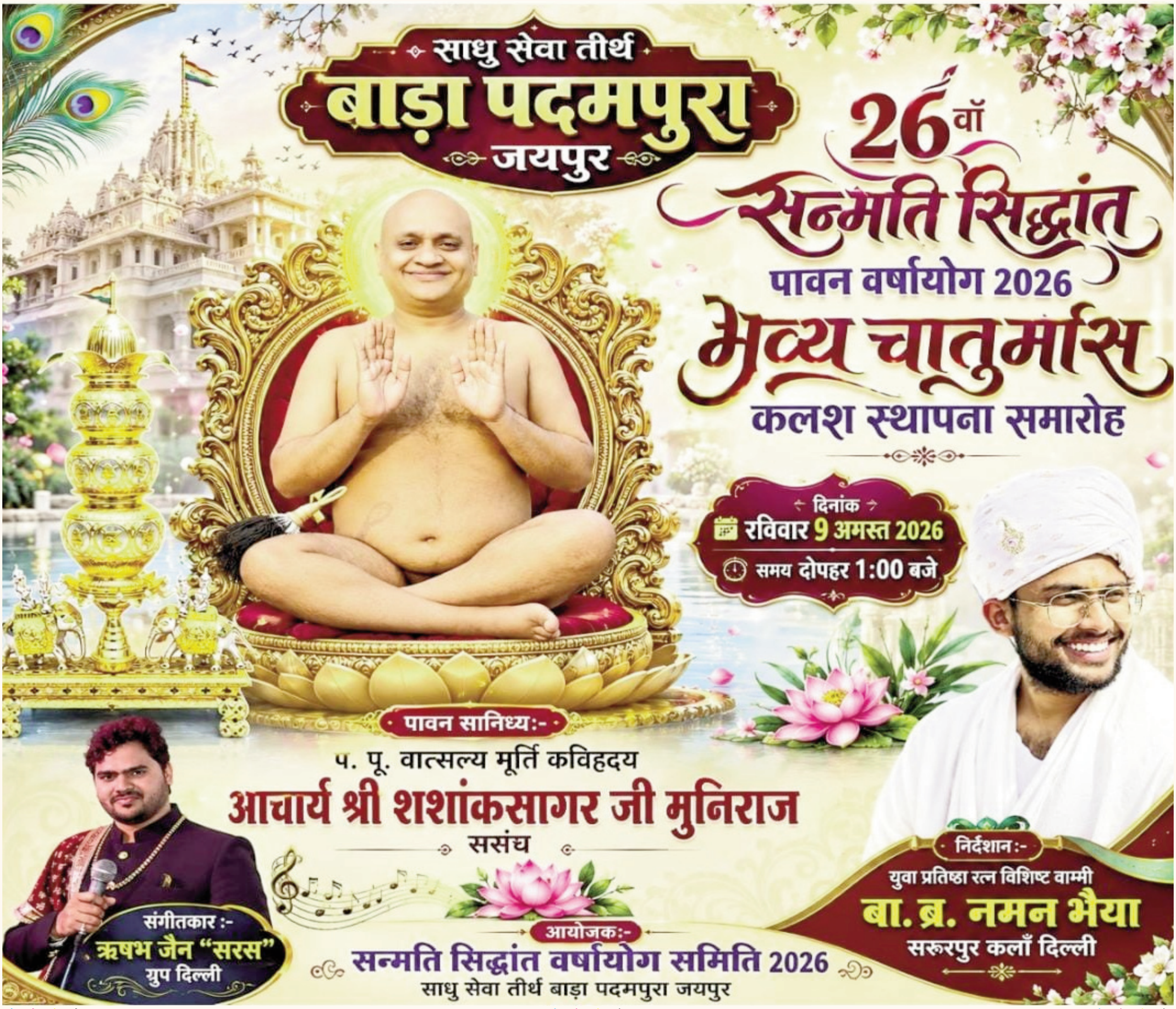

रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल ने आयोजित किया ट्रैफिक अवेयरनेस कैंप

500 से अधिक विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों की दी जानकारी

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल की ओर से राजा पार्क स्थित आदर्श विद्या मंदिर में जयपुर ट्रैफिक पुलिस के सहयोग से ट्रैफिक अवेयरनेस कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के 500 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। क्लब अध्यक्ष डॉ. राजीव जैन ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों के प्रति जागरूकता विकसित करना था। इस अवसर पर जयपुर ट्रैफिक पुलिस के अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (एडीसीपी ट्रैफिक) डॉ. हेमंत जाखड़ ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए हेलमेट और सीट बेल्ट के उपयोग, सुरक्षित तरीके से सड़क पार करने तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में यातायात नियमों का पालन करने के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। क्लब सचिव डॉ. अनुराग तोमर ने बताया कि ट्रैफिक पुलिस अधिकारियों ने आकर्षक पॉवर पॉइंट प्रस्तुति (पीपीटी) के माध्यम से सड़क सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण नियमों और सावधानियों को सरल तरीके से समझाया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को स्वयं यातायात नियमों का पालन करने तथा अपने परिवार और समाज को भी इसके प्रति जागरूक करने की शपथ दिलाई गई। क्लब मेंटर कुलदीप सिंह ढिल्लों ने बताया कि कार्यक्रम का संयोजन रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल की ट्रैफिक अवेयरनेस कमेटी के संयोजक रोटेरियन लोकेश मकवाना ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य राजेंद्र गुप्ता, वंदना मल्होत्रा, सुनयना नागपाल, विद्यालय के शिक्षकगण तथा रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

जगत कल्याण की कामना के साथ थूवोनजी में हुई महाशांतिधारा

चातुर्मास में जिलेभर से श्रद्धालुओं के आगमन की उम्मीद, भक्तांबर विधान से जुड़ने का आह्वान

थूवोनजी/अशोकनगर. शाबाश इंडिया। अतिशय क्षेत्र दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी में भगवान आदिनाथ स्वामी (खड़े बाबा) की विशाल प्रतिमा का विधि-विधान से महामस्तकाभिषेक एवं महाशांतिधारा का आयोजन किया गया। जिलेभर से पहुंचे श्रद्धालुओं ने विश्व शांति और जनकल्याण की कामना के साथ पूजा-अर्चना की। सांगानेर के विद्वान शास्त्री के मंत्रोच्चार के बीच 108 ऋद्धि मंत्रों से अभिषेक संपन्न हुआ। महाशांतिधारा का सौभाग्य राजस्थान के सिंगोली निवासी अशोक कुमार, शुभम एवं अर्चित जैन परिवार, मेरठ के नवीन कुमार एवं आर्जव जैन, क्षेत्र समिति के मंत्री सार्थक शैलेन्द्र दद्दा परिवार तथा मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा को प्राप्त हुआ। विशेष अवसर पर समिति के मंत्री प्रदीप जैन रानी एवं पूर्व महामंत्री विपिन सिंघई भी उपस्थित रहे। विजय धुर्रा ने बताया कि इस वर्ष अशोकनगर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक दिगंबर जैन संतों के चातुर्मास होने से बड़ी संख्या में श्रद्धालु जिले में पहुंचेंगे। इसका लाभ दर्शनोंदय तीर्थ थूवोनजी को भी मिलेगा और यहां दर्शनार्थियों का आवागमन बढ़ेगा। उन्होंने बताया कि शनिवार को इंदौर से सर सेठ हुकुमचंद परिवार के प्रतिनिधि अमित कासलीवाल तथा श्री दिगंबर जैन मक्सी तीर्थ समिति की अध्यक्ष पुष्पा कासलीवाल भी तीर्थ पहुंचेंगी। पूर्व महामंत्री विपिन सिंघई ने श्रद्धालुओं से असीमकालीन भक्तांबर विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि तीर्थ रक्षक योजना के माध्यम से श्रद्धालु स्थायी रूप से तीर्थ से जुड़ सकते हैं और प्रतिवर्ष परिवार सहित भक्तांबर विधान का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में महाशांतिधारा कराने वाले परिवारों का समिति की ओर से स्मृति चिन्ह, पीतवस्त्र, तिलक एवं माल्यार्पण कर सम्मान किया गया।

गांधीवादी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का लिया संकल्प

महात्मा गांधी जीवन दर्शन संस्थान, जयपुर की जिला स्तरीय बैठक आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। महात्मा गांधी जीवन दर्शन संस्थान, जिला जयपुर की जिला स्तरीय बैठक शनिवार को आमेर भवन, आमेर में आयोजित की गई। बैठक में जयपुर जिले की 19 विधानसभा क्षेत्रों के संयोजकों, गांधीवादी कार्यकताओं एवं प्रबुद्धजनों ने भाग लेते हुए महात्मा गांधी के विचारों और जीवन मूल्यों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के अध्यक्ष कुमार प्रशांत, राजस्थान सरकार के पूर्व महाधिवक्ता गिरधारी सिंह बापना, राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बी.एम. शर्मा, महात्मा गांधी जीवन दर्शन संस्थान, राजस्थान के प्रभारी एस.एस. जोशी, राजस्थान प्रदेश नशाबंदी समिति के अध्यक्ष धर्मवीर कटेवा, संयुक्त अभिभावक संघ के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार प्रो. संजय शर्मा, समग्र सेवा संघ, राजस्थान के अध्यक्ष सवाई सिंह तथा प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक जैन बिट्टू उपस्थित रहे। बैठक का उद्देश्य महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, सद्भाव, स्वच्छता, नशामुक्ति, सामाजिक समरसता और मानवता के मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाना तथा वर्तमान समय में गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता को रेखांकित करना था। अपने संबोधन में प्रो. बी.एम. शर्मा ने महात्मा गांधी के जीवन, संघर्ष और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने गांधीजी के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों का उल्लेख करते हुए उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। कुमार प्रशांत ने कहा कि वर्तमान समय में युवा पीढ़ी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से गांधीजी के जीवन और विचारों का गंभीरता से अध्ययन कर उन्हें व्यवहार में उतारने का आग्रह किया। कार्यक्रम का संचालन एस.एस. जोशी ने किया। उन्होंने वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता पर बल देते हुए नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता को मजबूत बनाने का संदेश दिया। समापन अवसर पर कुमार प्रशांत ने उपस्थित युवाओं एवं कार्यकर्ताओं को महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' भेंट की।

युवाओं को धर्म, संस्कार और राष्ट्र निर्माण का देंगे संदेश मुनि सुधासागर महाराज

9 अगस्त को इंदौर में विशेष युवा प्रवचन का आयोजन

इंदौर. शाबाश इंडिया

सकल दिगंबर जैन धर्म प्रभावना समिति एवं सकल जैन समाज, इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में रविवार, 9 अगस्त को तीर्थ चक्रवर्ती निर्यापक मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में युवाओं के लिए विशेष प्रवचन एवं आशीर्वचन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम दोपहर 2:30 बजे छत्रपति नगर स्थित तीर्थ स्वरूप आदिनाथ जिनालय के ऋषभ सभागृह में होगा। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन 'दद्दू' ने बताया कि कार्यक्रम का विषय ''धर्म, संस्कार और राष्ट्र निर्माण'' रखा गया है। इसका उद्देश्य युवाओं को आध्यात्मिक मूल्यों,

संस्कारों, सेवा, संगठन और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रेरित करना है। उन्होंने बताया कि मुनि सुधासागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के प्रभावक शिष्य हैं और उनके प्रेरक उद्बोधन से युवाओं को जीवन की सही दिशा और दशा का मार्गदर्शन मिलेगा। राहुल जैन (स्पोर्ट्स) ने बताया कि आयोजन में इंदौर के समस्त जैन युवा संगठन, मंडल, सोशल ग्रुप फेडरेशन, मुनि सेवा समितियां, युवा प्रकोष्ठ, जैन युवा व्यायामशाला एवं अन्य सामाजिक संगठनों के युवाओं को आमंत्रित किया गया है। आनंद गोधा, मनीष गोधा, मयंक जैन, राकेश गोहिल, हर्ष जैन एवं आकाश कोल ने युवाओं से समय पर उपस्थित होकर गुरुदेव के सान्निध्य का लाभ लेने का आग्रह किया है। समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि यह आयोजन युवा शक्ति को धर्म, संस्कार, सेवा और सामाजिक दायित्वों से जोड़ने का महत्वपूर्ण अवसर होगा। उन्होंने सभी युवाओं से अधिक से अधिक संख्या में अपने साथियों के साथ कार्यक्रम में शामिल होकर गुरुदेव के आशीर्वचन का लाभ लेने की अपील की।

> धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन 'दद्दू' ने बताया कि कार्यक्रम का विषय ''धर्म, संस्कार और राष्ट्र निर्माण'' रखा गया है। इसका उद्देश्य युवाओं को आध्यात्मिक मूल्यों, संस्कारों, सेवा, संगठन और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रेरित करना है।

मोह घटे, राग-द्वेष मिटे और आत्मा का बोध हो, यही सच्चा धर्म: जिनदेवी माताजी

सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में 44 दिवसीय कल्याण मंदिर दीपार्चना, पद्मावती माता की गोद भराई एवं सहस्रनाम कुमकुम अर्चना सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका प्रमुख 105 जिनदेवी माताजी ससंघ के सान्निध्य में चल रहे 44 दिवसीय श्री कल्याण मंदिर दीपार्चना महोत्सव के अंतर्गत शुक्रवार को भगवान पार्श्वनाथ की आराधना के बाद पद्मावती माता की गोद भराई एवं सहस्रनाम कुमकुम अर्चना श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न हुई। इस दौरान पूरा मंदिर परिसर भगवान पार्श्वनाथ एवं पद्मावती माता के जयकारों से गुंजायमान रहा। मंदिर अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी, महामंत्री धमीचंद कासलीवाल एवं कोषाध्यक्ष राकेश मुशरफ ने बताया कि प्रातःकाल अभिषेक एवं शांतिधारा के बाद संगीतमय कल्याण मंदिर दीपार्चना आयोजित की गई, जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्ति-नृत्य करते हुए भगवान की आराधना की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए गणिनी प्रमुख आर्यिका जिनदेवी माताजी ने कहा कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि केवल एक परिवर्तन है। शरीर नष्ट होता है, आत्मा नहीं। उन्होंने कहा कि जन्म-मरण के चक्र का मूल कारण मोह है। जब तक जीव धन, परिवार, पद, प्रतिष्ठा और शरीर के प्रति आसक्ति बनाए रखता है, तब तक वह कर्मों के बंधन में बंधा रहता है। माताजी ने कहा कि संसार का सबसे मजबूत बंधन लोहे की जंजीर नहीं, बल्कि मोह की जंजीर है। इससे मुक्ति केवल विवेक, सम्यग्दर्शन और वैराग्य से ही संभव है। उन्होंने श्रद्धालुओं का आह्वान किया कि वे संसार का त्याग नहीं, बल्कि संसार के प्रति आसक्ति का त्याग करें। परिवार और समाज में रहते हुए भी आत्मसाधना, वैराग्य और भगवान महावीर के वीतराग मार्ग का अनुसरण करें। उन्होंने कहा, ''सच्चा धर्म वही है जो मोह को घटाए, राग-द्वेष को मिटाए और आत्मा को उसके शुद्ध स्वरूप का अनुभव कराए।'' धर्मसभा से पूर्व चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं आर्यिका माताजी का पाद प्रक्षालन किया गया तथा जिनवाणी भेंट की गई। कार्यक्रम का समापन जिनवाणी स्तुति के साथ हुआ। राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि शनिवार को प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, नित्य नियम पूजा, संगीतमय कल्याण मंदिर दीपार्चना तथा आर्यिका माताजी के मंगल प्रवचन होंगे। मंदिर अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी ने बताया कि रविवार, 9 अगस्त को प्रातः 6 बजे से शाम 6 बजे तक 12 घंटे का अखंड णमोकार महामंत्र जाप आयोजित किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है।

गुरु-आज्ञा से प्रारंभ हुई ज्ञान-साधना ही साधक को युग का पथप्रदर्शक बनाती है: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

शांतिभवन में गुरु आनंद जन्मोत्सव के तृतीय दिवस धर्मसभा, साध्वी सौम्याजी ने लिए 16 उपवास के प्रत्याख्यान

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। गुरु आनंद जन्मोत्सव के अंतर्गत शांतिभवन में आयोजित नवदिवसीय कार्यक्रम के तृतीय दिवस श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने कहा कि गुरु का सान्निध्य जीवन को दिशा देता है, लेकिन गुरु-आज्ञा का पूर्ण पालन ही साधक को युग का पथप्रदर्शक बनाता है। उन्होंने आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ज्ञान, विनय, एकाग्रता, जिज्ञासा और निरंतर पुरुषार्थ से ही व्यक्तित्व का वास्तविक निर्माण होता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि बालक नेमीचंद को प्रारंभ से ही माता से संस्कार और गुरु रत्न ऋषिजी महाराज से जीवन की दिशा मिली। दीक्षा के बाद गुरु ने उन्हें सेवा के स्थान पर ज्ञान-साधना का दायित्व सौंपा। गुरु-आज्ञा को ही साधना मानकर उन्होंने संस्कृत व्याकरण, आगम और शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया तथा ज्ञान को केवल स्मरण तक सीमित न रखकर जीवन का

संस्कार बना लिया। उन्होंने कहा कि स्मरणशक्ति का आधार केवल बुद्धि नहीं, बल्कि एकाग्रता और धारणा शक्ति है। जो साधक निरंतर अध्ययन, मनन और जिज्ञासा बनाए रखता है, वही ज्ञान को आत्मसात कर पाता है। उन्होंने एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि ₹ज्ञान-साधना को एक दिन की छुट्टी दोगे, तो वह तुम्हें दो दिन पीछे कर देगी।₹ यही निरंतरता असाधारण विद्वत्ता का आधार बनती है। युवाचार्यश्री ने कहा कि गुरु शिष्य की वर्तमान उपलब्धियों से आगे बढ़कर उसकी संभावनाओं का निर्माण करते हैं। कठिन परिस्थितियों और सीमित संसाधनों के बावजूद आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज ने अनेक भाषाओं, आगमों और शास्त्रों का गहन अध्ययन कर अपने ज्ञान को समाज और जिनशासन के कल्याण के लिए समर्पित किया। उनका जीवन विनय, श्रुत, आचार और तप समाधि का अनुपम उदाहरण है। धर्मसभा में साध्वी काव्याश्रीजी ने कहा कि आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज ने आजीवन एक समय आहार ग्रहण कर अनुशासन और संयम का आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सजगता से किया गया भोजन शरीर को पुष्ट करता है, उसी प्रकार एकाग्रचित्त भजन आत्मा को शांति और आनंद प्रदान करता है। कार्यक्रम के दौरान तप-आराधना का नया अध्याय भी प्रारंभ हुआ। साध्वी सौम्याजी ने 16 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण कर उच्च तप-साधना की ओर अग्रसर होने का संकल्प लिया। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर गुरु आनंद ऋषिजी महाराज के जीवन से प्रेरणा ग्रहण की।

गायक संजय रायजादा का नया गीत 'वो मेरा गांव' रिलीज

पद्मभूषण एवं ग्रैमी अवॉर्ड विजेता पंडित विश्व मोहन भट्ट ने किया लॉन्च

जयपुर. शाबाश इंडिया। प्रख्यात गायक एवं एबीसीएल फेम संजय रायजादा का नया गीत 'वो मेरा गांव' रिलीज हो गया है। गीत का लोकार्पण पद्मभूषण एवं ग्रैमी अवॉर्ड विजेता पंडित विश्व मोहन भट्ट ने किया। गीत के बोल प्रदीप भारद्वाज ने लिखे हैं, जबकि इसका संगीत शिखाझमयंक ने तैयार किया है। संगीत संयोजन ऋषिकेश सोनी ने किया है तथा वीडियो का निर्देशन बी.एल. मान ने किया है। गीत की रिकॉर्डिंग आर.ए.पी. स्टूडियो में की गई। 'वो मेरा गांव' में गांव की मिट्टी की सौंधी महक, अपनापन और ग्रामीण जीवन की भावनाओं को सरल शब्दों, मधुर संगीत और प्रभावशाली गायन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। गीत श्रोताओं को अपनी जड़ों और गांव की यादों से जोड़ने का प्रयास करता है। यह गीत संजय रायजादा के आधिकारिक यूट्यूब चैनल के साथ-साथ स्पॉटिफाई, एप्पल म्यूजिक और अन्य प्रमुख ऑडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध है।

श्री राम किंकर उपाध्याय पुस्तकालय को जैन श्रमण संस्कृति के 50 से अधिक दुर्लभ ग्रंथ भेंट

भोपाल. शाबाश इंडिया। तुलसी मानस प्रतिष्ठान, मध्यप्रदेश द्वारा तुलसी जयंती समारोह-2026 के अंतर्गत आयोजित पंचदिवसीय श्रीराम कथा के अवसर पर श्री राम किंकर उपाध्याय पुस्तकालय एवं शोध केंद्र को जैन श्रमण संस्कृति के 50 से अधिक आधारभूत प्राकृत एवं संस्कृत शास्त्रीय ग्रंथ भेंट किए गए। यह अमूल्य ग्रंथ सिंघई सतीशचंद्र-केशरदेवी जैन जनकल्याण संस्थान, नैनागिरि की ओर से वरिष्ठ प्रशासक सुरेश जैन (आईएएस) एवं न्यायमूर्ति विमला जैन ने प्रदान किए। कार्यक्रम में श्रद्धेय दीदी मंदाकिनी राम किंकर, पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी, प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष एवं पूर्व सांसद रघुनंदन शर्मा तथा पूर्व सांसद एवं तुलसी मानस के संपादक पी.डी. मिश्रा उपस्थित रहे। इस अवसर पर सुरेश जैन ने कहा कि श्री राम किंकर उपाध्याय पुस्तकालय

एवं शोध केंद्र भारतीय ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। उन्होंने बताया कि यहां 22 हजार से अधिक पुस्तकों का संग्रह उपलब्ध है और यह शोधकताओं, विद्यार्थियों तथा संस्कृति प्रेमियों के लिए राष्ट्रीय स्तर का अध्ययन केंद्र बन गया है। उन्होंने प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष रघुनंदन शर्मा, संयोजक राजेंद्र शर्मा तथा समस्त पदाधिकारियों के सांस्कृतिक योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि भेंट किए गए ग्रंथों में षट्खंडागम, कसायपाहुड़, आदिपुराण, उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण तथा अन्य दुर्लभ प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथ शामिल हैं। उन्होंने कहा कि षट्खंडागम और कसायपाहुड़ लगभग दो हजार वर्ष पुरानी भारतीय आध्यात्मिक एवं दार्शनिक परंपरा के आधारभूत ग्रंथ हैं, जिनमें आत्मा, कर्म, कषाय और जीवन-दर्शन का गहन विवेचन मिलता है। इस वर्ष षट्खंडागम का द्विसहस्राब्दी समारोह मनाया जा रहा है, इसलिए इन ग्रंथों पर आधुनिक संदर्भों में व्यापक अध्ययन और शोध की आवश्यकता है। सुरेश जैन ने कहा कि आदिपुराण, उत्तरपुराण, पद्मपुराण, पउमचरियं और हरिवंशपुराण जैसे ग्रंथ भगवान ऋषभदेव, भरत, बाहुबली, भगवान राम, लक्ष्मण, श्रीकृष्ण और नेमिनाथ सहित अनेक महापुरुषों के आदर्श जीवन का वर्णन करते हैं। उन्होंने कहा कि वैदिक और श्रमण परंपराएं भारतीय संस्कृति की दो सशक्त धाराएं हैं, जो अहिंसा, समरसता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को मजबूत करती हैं। कार्यक्रम में न्यायमूर्ति विमला जैन, सुप्रसिद्ध इंजीनियर सुरेंद्र सिंघई, प्रो. महेंद्र सिंघई, अपर आयुक्त सहकारिता अखिलेश जैन, वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. विनोद मोदी सहित अनेक विद्वान एवं समाजजन उपस्थित रहे।

अपने स्वभाव पर देव शास्त्र गुरु पर विश्वास करना ही अपना कल्याण सम्भव: आचार्य सुन्दर सागर महाराज

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में आचार्य सुन्दर सागर महाराज संघ के सानिध्य में आयोजित सुन्दर युवा मंच के द्वारा भक्तामर पाठ का आयोजन किया जाएगा जिसमें जैन मुनियों के मुखारविंद से रिद्धि मंत्रों का उच्चारण किया जाएगा। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर महाराज के शिष्य आचार्य सुन्दर सागर महाराज, मुनि श्रुंताश सागर महाराज, आर्यिका चिंतन मति माताजी, एवं आर्यिका सुलक्ष्य मति माताजी के मुखारविंद से रिद्धि मंत्रों से मंत्रोच्चार करते हुए भक्तामर पाठ किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को वषायोग के तहत दिव्य तपस्वी आचार्य सुन्दर सागर महाराज एवं आर्यिका सुलक्ष्य मति माताजी की आहार चर्या करवाने का सौभाग्य रामपाल, ओमप्रकाश,एवं शिवराज चंवरिया को मिला। सुन्दर युवा मंच के मीडिया प्रभारी हितेश छाबड़ा एवं विमल पाटनी ने बताया कि शनिवार को सायंकाल भक्तामर की दीपक के माध्यम से भक्तामर अनुष्ठान आराधना गाजे बाजे के साथ किया जाएगा जिसमें संगीतमय भजनों के साथ रिद्धि मंत्रों के द्वारा भक्तामर पाठ अनुष्ठान किया जाएगा। जौंला ने बताया कि शुक्रवार को सर्वज्ञ राम कथा दिव्य देशना में दिव्य तपस्वी आचार्य सुन्दर सागर महाराज ने कहा कि सर्व प्रथम अपने स्वभाव पर देव शास्त्र गुरु पर विश्वास करना। दूसरे भगवान की वाणी पर विश्वास रखना और यदि कहीं ऐसा आपके मन में आए कि किसी ने मेरे साथ विश्वासघात किया तो भगवान से उसके मन में सद्बुद्धि जाग्रत होने के लिए प्रार्थना करना क्योंकि समय से पूर्व और भाग्य से अधिक किसी को न आज तक मिला है न भविष्य में मिलेगा। धर्म सभा में जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा, सुशील जैन, विष्णु बोहरा, महेंद्र चंवरिया, विनोद बनस्थली, विमल झिलाय, महेश मोठूका, मुकेश बनेठा, पारसमल सिरस, चिरंजीलाल रामनगर, नितिन चंवरिया, शंभु कठमाणा, त्रिलोक रजवास, विमल दलाल, दिनेश गिन्दोडी, मौजूद थे। इस दौरान महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, जयपुर सहित कई राज्यों से आए श्रद्धालुओं को आचार्य सुन्दर सागर महाराज के चरण प्रक्षालन करने का सौभाग्य मिला। इस अवसर पर आर्यिका सुलक्ष्य मति माताजी ने भी संबोधित किया।

विनम्रता से ही पुण्य का संचय होता है: आर्यिका विष्णु प्रभा माताजी

जयपुर. शाबाश इंडिया। कमला नेहरू नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा में दिव्य तपस्वी राष्ट्र गौरव आचार्य सुंदर सागर महाराज की सुशिष्या आर्यिका श्री 105 विष्णु प्रभा माताजी ने कहा कि विनम्रता और गुरु-भक्ति ही आत्मकल्याण का आधार हैं। उन्होंने कहा कि सम्यग्दृष्टि जीव ही ऐसे शुभ भाव बना पाते हैं, जिनसे उन्हें गुरु के उपदेश सुनने और आत्मचिंतन का अवसर प्राप्त होता है। सामाजिक कार्यकर्ता जयकुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि आर्यिका श्री ने श्रद्धालुओं से जागरूक और एकाग्र श्रोता बनने का आह्वान करते हुए कहा कि सम्यग्दृष्टि का वास्तविक अर्थ देव, शास्त्र और गुरु के प्रति सदैव श्रद्धा एवं समर्पण बनाए रखना है। जब व्यक्ति जागरूकता के साथ धर्म श्रवण करता है, तभी उसके जीवन में विनम्रता और सद्गुणों का विकास होता है। संघस्थ बाल ब्रह्मचारिणी शैली दीदी ने बताया कि आर्यिका श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि जितनी अधिक विनय हम गुरुजनों और बड़ों के प्रति करेंगे, उतना ही अधिक पुण्य का संचय होगा। विनम्रता से जीवन में सद्भाव, शांति और सकारात्मकता का संचार होता है तथा बड़ों का आशीर्वाद और शुभकामनाएं व्यक्ति के जीवन को सुख, शांति और समृद्धि की दिशा प्रदान करती हैं। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर आर्यिका श्री के मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया।

चित्रकूट नगर स्थित पेसिफिक कॉलेज के नव संचालित कैम्पस में उत्साह के साथ शुरू हुआ नवीन सत्र

संवाद, गतिविधियों और सरप्राइज गिफ्ट्स ने पहले दिन को बनाया यादगार

उदयपुर. शाबाश इंडिया

चित्रकूट नगर स्थित पेसिफिक कॉलेज के नव संचालित कैम्पस में गुरुवार को नवीन शैक्षणिक सत्र का आरंभ उल्लास, उमंग और नई संभावनाओं के वातावरण में हुआ। पहले ही दिन कैम्पस विद्यार्थियों की उत्सुकता, नए परिचयों और भविष्य के सपनों से जीवंत नजर आया। इसमें सभी विद्यार्थियों ने कैम्पस का भ्रमण किया। वहीं, आधुनिक शैक्षणिक परिवेश, अध्ययन सुविधाओं और विभिन्न विभागों की जानकारी लेते हुए विद्यार्थियों ने अपने नए शिक्षण-सफर को करीब से महसूस किया। अनेक विद्यार्थी पहली बार कॉलेज जीवन की नई दहलीज पर पहुंचे थे, इसलिए उनके चेहरों पर उत्साह के साथ हल्की जिज्ञासा भी दिखाई दी। फैकल्टी सदस्यों ने विद्यार्थियों का आत्मीय स्वागत करते हुए उन्हें केवल पाठ्यक्रमों तक सीमित न रहने, बल्कि अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल को निरंतर निखारने के लिए प्रेरित किया। संवाद कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने करियर, विषय चयन, रचनात्मक गतिविधियों, व्यक्तित्व विकास और कॉलेज की दिनचर्या से जुड़े प्रश्नों को खुलकर रखा। फैकल्टी ने सहजता से उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया और भरोसा दिलाया कि कैम्पस में शिक्षा के साथ कौशल, संस्कार और आत्मविश्वास को भी समान महत्व दिया जाएगा। कॉलेज प्रिंसिपल डॉ रिमझिम गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विविध रोचक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। परिचयात्मक सत्रों, समूह गतिविधियों और संवादात्मक आयोजनों ने नए साथियों के बीच सहजता व मित्रता का वातावरण बनाया। इससे पहले दिन की औपचारिकता जल्दी ही आत्मीय अनुभव में बदल गई। उन्होंने बताया कि दिन का विशेष आकर्षण सरप्राइज गिफ्ट्स रहे। गतिविधियों में भागीदारी करने वाले विद्यार्थियों को उपहार प्रदान किए गए, जिससे उनकी खुशी दोगुनी हो गई। कैम्पस के पहले दिन ने यह संदेश भी दिया कि यहां शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं होगी, बल्कि सीखने, संवाद करने और अपनी अलग पहचान बनाने के अनेक अवसर विद्यार्थियों को मिलेंगे।

फाइनल काउंसलिंग और एडमिशन के लिए अंतिम अवसर

डॉ गुप्ता ने बताया कि कॉलेज में विभिन्न स्ट्रीम के लास्ट काउंसलिंग जारी है और लिमिटेड सीट्स में प्रवेश के लिए अंतिम अवसर है।

'तुझसे दूर' में सुरों ने छुआ जुदाई का एहसास, अथर्व जोशी की नई पेशकश हुई रिलीज़

सावेरी वर्मा के अल्फाज और सुबास्तु दक्ष पांडे की विजुअल कहानी ने गीत को दी भावनात्मक गहराई

मुंबई/उदयपुर। कुछ रिश्ते दूर होकर भी दिल के बेहद करीब बने रहते हैं और कुछ एहसास शब्दों से ज्यादा संगीत में अपनी बात कह पाते हैं। इन्हीं भावनाओं को सुरों में पिरोते हुए संगीतकार अथर्व जोशी ने अपना नया गीत 'तुझसे दूर' संगीत प्रेमियों के लिए पेश किया है। प्रसिद्ध गीतकार सावेरी वर्मा के लिखे शब्दों और निर्देशक सुबास्तु दक्ष पांडे के विजुअल ट्रीटमेंट से सजा यह गीत शुक्रवार को प्रमुख ऑडियो और वीडियो प्लेटफॉर्म्स पर रिलीज़ हुआ।'तुझसे दूर' प्रेम, दूरी और यादों के बीच जन्म लेने वाली उस भावनात्मक खामोशी की कहानी कहता है, जिसे अक्सर शब्दों में व्यक्त करना आसान नहीं होता। अथर्व जोशी ने अपनी मधुर और संवेदनशील धुनों के जरिए इस अनुभूति को संगीत का रूप दिया है। अमेज़न प्राइम और डिज़्नी+ हॉटस्टार जैसे प्रतिष्ठित OTT प्लेटफॉर्म्स सहित विभिन्न प्रोजेक्ट्स से जुड़े रहे अथर्व इस गीत में भी अपनी अलग संगीत संवेदना का परिचय देते हैं।गीतकार सावेरी वर्मा के भावपूर्ण शब्द गीत को शायरी जैसा असर देते हैं, जबकि निर्देशक सुबास्तु दक्ष पांडे ने अपने विजुअल स्टोरीटेलिंग के अंदाज से इसे पर्दे पर एक खूबसूरत भावनात्मक यात्रा में बदल दिया है।अथर्व जोशी ने कहा कि 'तुझसे दूर' उनके लिए केवल एक संगीत प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि बेहद निजी और संवेदनशील अनुभव रहा। उन्होंने कहा कि सावेरी वर्मा के शब्द और सुबास्तु दक्ष पांडे का विज़न इस धुन को एक नई पहचान देता है।गीत Spotify, Apple Music, Amazon Music, YouTube सहित प्रमुख डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है।

रिपोर्ट/फोटोः दीपेंद्र कुमावत

दिगंबर जैन समाज, बापू नगर का तीर्थयात्रा दल विभिन्न अतिशय क्षेत्रों के दर्शन कर लौटा

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज, बापू नगर के 14 श्रद्धालुओं का धार्मिक तीर्थयात्रा दल 4 अगस्त को प्रातः पार्श्वनाथ चैत्यालय, बापू नगर से विभिन्न जैन अतिशय क्षेत्रों के दर्शन के लिए रवाना हुआ। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्ति, पूजा-अर्चना और धमार्राधना का लाभ प्राप्त किया। यात्रा के प्रथम चरण में श्रद्धालुओं ने आंवा स्थित भगवान शांतिनाथ के दर्शन किए। इसके बाद जहाजपुर पहुंचकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की पूजा-अर्चना की तथा वहीं सामूहिक भोजन किया। तत्पश्चात दल चांदखेड़ी पहुंचा, जहां रात्रि विश्राम किया गया। दूसरे दिन प्रातः चांदखेड़ी में भगवान का अभिषेक एवं मूलनायक भगवान की प्रतिमा पर शांतिधारा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुए इन धार्मिक अनुष्ठानों ने श्रद्धालुओं को आत्मिक शांति का अनुभव कराया। इसके बाद भोजन उपरांत दल इंदरगढ़ के लिए रवाना हुआ, जहां सहस्त्रमणि पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन किए गए। भगवान की प्राचीन एवं मनोहारी प्रतिमा ने सभी श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। यात्रा के अंतिम चरण में श्रद्धालुओं ने सवाई माधोपुर स्थित अतिशय क्षेत्र श्री आदिनाथ भगवान चमत्कारजी मंदिर में दर्शन एवं वंदना की। इसके बाद सभी श्रद्धालु रात्रि में जयपुर के लिए रवाना हुए और सकुशल अपने गंतव्य पर पहुंचे। समाज के पदाधिकारियों ने बताया कि पूरी यात्रा अनुशासित, सुव्यवस्थित और आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुई। तीर्थयात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्ति, साधना और धर्मचिंतन का लाभ उठाते हुए अनेक पवित्र जैन तीर्थों के दर्शन किए।

समय खेल खिलाता है, किस्मत नाच नचाती है: अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज

पुष्पगिरि तीर्थ में वर्षायोग के दौरान श्रद्धालुओं को दिया जीवन-दर्शन का संदेश

सोनकच्छ/पुष्पगिरि. शाबाश इंडिया

पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के सान्निध्य में वषायोग कर रहे अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में धार्मिक आयोजनों का क्रम निरंतर जारी है। इसी क्रम में रविवार प्रातः धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज ने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि ''समय खेल खिलाता है और किस्मत नाच नचाती है।'' जीवन एक रंगमंच है, जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन की खोज कर रहे हैं, जबकि मनुष्य को अपने जीवन में मंगल और सदाचार की तलाश करनी चाहिए। जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, ''मिट्टी के दीपक जैसा है यह जीवन, तेल समाप्त तो खेल समाप्त।'' आचार्यश्री ने जीवन के अनेक व्यावहारिक सत्य बताते हुए कहा कि मनुष्य को अहंकार, संग्रह और मोह से दूर रहकर संयम एवं सदाचार का मार्ग अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम इस धरती के स्थायी स्वामी नहीं, बल्कि कुछ समय के लिए आए हुए अतिथि हैं। इसलिए जीवन को सार्थक बनाने के लिए सद्कर्म, सेवा और आत्मचिंतन आवश्यक हैं। उन्होंने संयमित वाणी पर बल देते हुए कहा कि मनुष्य को उतना ही बोलना चाहिए, जितना वह सुन सके। साथ ही उन्होंने कहा कि संसार में सब कुछ जोड़ने की होड़ लगी है, जबकि अंततः सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है। इसलिए जीवन में धन से अधिक मानवीय मूल्यों और आत्मिक विकास को महत्व देना चाहिए। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री के प्रेरक प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पियूष कासलीवाल (औरंगाबाद) ने यह जानकारी दी।

व्यवहार धर्म से पुण्य और निश्चय धर्म से आत्मकल्याण संभव: आचार्य विहर्षसागरजी महाराज

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित प्रातःकालीन धर्मसभा श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण के बीच सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य 108 श्री वर्धमान सागरजी महाराज, आचार्य 108 श्री विराग सागरजी महाराज एवं आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागरजी महाराज के चित्रों के अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं पूवार्चार्यों को अर्घ्य समर्पित कर किया गया। धर्मसभा में आचार्य 108 श्री विहर्षसागरजी महाराज ने धर्म के गूढ़ सिद्धांतों का विवेचन करते हुए कहा कि धर्म दो प्रकार का होता है—व्यवहार धर्म और निश्चय धर्म। व्यवहार धर्म से पुण्य की प्राप्ति होती है, जबकि आत्मकल्याण के लिए निश्चय धर्म और आत्मस्वरूप की अनुभूति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषाय आत्मा को उसके वास्तविक स्वरूप से दूर ले जाते हैं। प्रत्येक जीव को अपने कर्मों का फल स्वयं भोगना पड़ता है, इसलिए शरीर का उपयोग आत्मसाधना और कल्याण के लिए करना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि आत्मा में अनादिकाल से संस्कार विद्यमान हैं। जब तक मनुष्य अपने स्वभाव रूपी सरोवर में नहीं उतरता, तब तक वास्तविक शांति और कल्याण संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि धर्म की प्रत्येक क्रिया तभी सार्थक होती है, जब उसमें श्रद्धा, सम्यक दृष्टि और निर्मल भाव जुड़े हों। केवल बाहरी पूजा पर्याप्त नहीं, बल्कि अंतर्मन की शुद्धता ही आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने श्रद्धालुओं को संदेश देते हुए कहा, ''अपने आप में नेक रहो, अपने आप में एक रहो।'' धर्मसभा में मुनि 108 श्री विजयेश सागरजी महाराज ने भी प्रेरणादायी प्रवचन दिए। आचार्य विहर्षसागरजी महाराज के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य अभयकुमार, महावीर कुमार एवं राजकुमार गांधी (सलूम्बर) परिवार को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन कमल बैद ने किया। धर्मसभा में गुरुग्राम, ग्वालियर, चित्तौड़गढ़ और दिल्ली सहित विभिन्न स्थानों से आए श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इससे पूर्व आर.के. कम्युनिटी सेंटर स्थित अस्थायी चैत्यालय में विराजमान भगवान आदिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक एवं शांतिधारा आचार्यश्री ससंघ के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। इसका सौभाग्य सुरेंद्र-शशि, सिद्धांत-ऋतिका, संगम-चेतन (चेरी, कुचामन सिटी) तथा पंकज-विनय पाटनी (अजमेर) परिवार को प्राप्त हुआ।

देश के प्रतिष्ठित मंचों की पहली पसंद बन रहे हैं कवि हृदय विकर्ष शास्त्री

जयपुर. शाबाश इंडिया

धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आयोजनों के मंचों पर युवा वक्ता एवं मंच संचालक कवि हृदय विकर्ष शास्त्री अपनी विशिष्ट पहचान बना रहे हैं। प्रभावशाली वक्तृत्व, ओजस्वी वाणी, सशक्त मंच संचालन और जिनशासन के प्रति समर्पण के कारण वे देश के अनेक प्रतिष्ठित आयोजनों की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के एक छोटे से गांव से राष्ट्रीय स्तर तक का सफर तय करने वाले विकर्ष शास्त्री ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और अनुशासित व्यक्तित्व के बल पर देशभर के अनेक धार्मिक आयोजनों में सफल मंच संचालन एवं कार्यक्रम निर्देशन का दायित्व निभाया है। उनकी सरल, प्रभावशाली और आत्मीय प्रस्तुति शैली श्रोताओं को सहज ही आकर्षित करती है। हाल ही में मुंबई महानगर में आयोजित मंगल कलश स्थापना महोत्सव में उनके उत्कृष्ट मंच संचालन और कार्यक्रम निर्देशन की व्यापक सराहना हुई। इस अवसर पर आयोजकों द्वारा उनका सार्वजनिक सम्मान भी किया गया। उपस्थित संतों, विद्वानों और श्रद्धालुओं ने उनकी प्रस्तुति तथा संयोजन क्षमता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। कवि हृदय विकर्ष शास्त्री दिल्ली, मुंबई, गुवाहाटी, दीमापुर सहित देश के अनेक प्रमुख शहरों में आयोजित धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। एक युवा विद्वान, कुशल मंच संचालक और प्रेरक वक्ता के रूप में वे समाज में सकारात्मक पहचान बना चुके हैं। उनकी बढ़ती राष्ट्रीय पहचान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि जैन समाज के युवा वर्ग के लिए भी प्रेरणा का विषय है। समाज को विश्वास है कि वे अपनी प्रतिभा, विनम्रता और समर्पित कार्यशैली के माध्यम से भविष्य में भी जिनशासन की प्रभावना और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।